IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
Science | Engineering | Technology

ISSN(O): 2319-8753
ISSN(P): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science Engineering and Technology (IJIRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

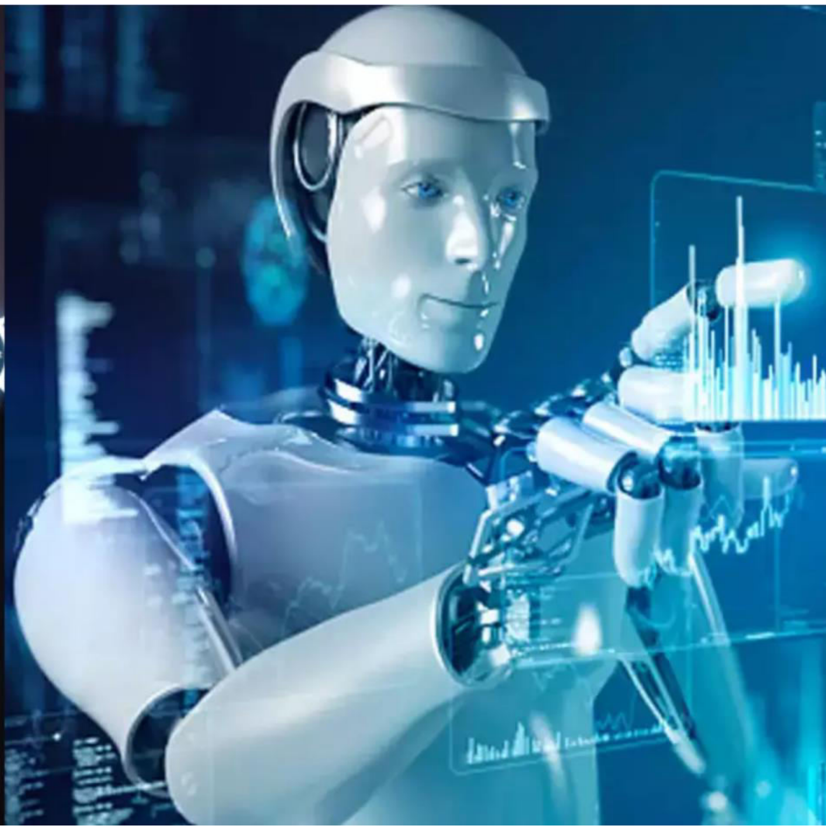

Impact Factor: 8.699

Volume 14, Issue 4, April 2025

www.ijirset.com | ijirset@gmail.com | +91-9940572462 | +91 63819 07438

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.699

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Refereed Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 4, April 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1404730|

गुप्तकाल में सामाजिक व्यवस्था

राजेश कुमार

सहायक आचार्य, इतिहास

राजकीय कन्या महाविद्यालय, सांडवा, (चूरु)

सारांश

*गुप्तकाल (लगभग 320 ई. से 550 ई.) भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण युग रहा है, जिसे श्भारत का स्वर्ण युगश कहा जाता है। इस काल में न केवल राजनीतिक एकता और सांस्कृतिक उत्कर्ष देखा गया, बल्कि सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था में भी गहन परिवर्तन और पुनर्गठन की प्रक्रिया आरंभ हुई। सामाजिक दृष्टि से यह युग वर्ण व्यवस्था के पुनर्संस्थापन, जातीय अनुशासन और धर्म–संबंधी आचार–नियमों के पुनरुद्धार के लिए जाना जाता है। ब्राह्मणों को विशेष सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई और समाज में शूद्रों तथा निम्नवर्गों की स्थिति अपेक्षाकृत निम्न रही। स्त्रियों की भूमिका मुख्यतः घरेलू सीमाओं तक सीमित रही, हालांकि कुछ उच्च कुलों की स्त्रियों को शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी का अवसर भी प्राप्त था।*धार्मिक *दृष्टिकोण से गुप्तकाल धार्मिक सहिष्णुता और विविधता का युग रहा। इस काल में वैदिक धर्म का पुनरुत्थान हुआ और पौराणिक हिंदू धर्म (विशेषकर विष्णु, शिव और शक्ति की उपासना) अधिक लोकप्रिय हुआ। मंदिर निर्माण, मूर्तिपूजा और धार्मिक अनुष्ठानों का विस्तार इसी काल में हुआ। साथ ही बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म भी समांतर रूप से अस्तित्व में बने रहे, यद्यपि उनका प्रभाव धीरे–धीरे सीमित होता गया। धर्म और राज्य के संबंध भी इस काल में अधिक घनिष्ठ हुए, जहाँ शासक स्वयं को धर्मरक्षक एवं धर्म प्रचारक के रूप में प्रस्तुत करने लगे।*

यह शोधपत्र गुप्तकालीन समाज की बहुआयामी संरचना, वर्गीकरण, स्त्री–पुरुष की सामाजिक भूमिकाओं, जाति व्यवस्था के स्वरूप, धार्मिक बहुलता और इन समस्त तत्वों के परस्पर संबंधों का समग्र एवं आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन के माध्यम से गुप्तकाल की सामाजिक व्यवस्था की विशेषताओं और उसके दूरगामी प्रभावों को समझने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द – गुप्तकाल, सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक विविधता, ब्राह्मणवाद, वर्ण व्यवस्था।

प्रस्तावना :

भारतीय इतिहास में गुप्तकाल (लगभग 320 ई. से 550 ई.) को राजनीतिक स्थिरता, सांस्कृतिक समृद्धि और बौद्धिक उत्कर्ष का काल माना जाता है। यह युग सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, क्योंकि इसी समय समाज में परंपराओं का पुनर्गठन हुआ और धार्मिक जीवन की नई दिशाएँ उभरीं। गुप्त वंश के शासकों ने एक ओर जहाँ राज्य की सीमाओं का विस्तार किया, वहीं दूसरी ओर समाज को व्यवस्थित करने के लिए धर्म और परंपराओं का सहारा लिया। यह काल केवल राजनैतिक विजय की कहानी नहीं है, बल्कि सामाजिक अनुशासन, धार्मिक आस्थाओं और सांस्कृतिक मूल्यों के पुनर्निर्माण की यात्रा भी है।इस काल में समाज एक कठोर वर्ण व्यवस्था पर आधारित था, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्णों के कर्तव्यों एवं अधिकारों को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया गया। ब्राह्मणों को समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था और वे शिक्षा, यज्ञ–कर्म तथा धर्म–प्रचार के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था पर प्रभाव डालते थे। शूद्रों एवं महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत निम्न मानी जाती थी, यद्यपि कुछ अपवादों के रूप में शिक्षित एवं प्रभावशाली स्त्रियों तथा सेवा में लगे वर्गों की भूमिका भी दिखाई देती है। विवाह, परिवार, उत्तराधिकार और सामाजिक जीवन के अन्य पहलुओं में धर्मशास्त्रों की निर्णायक भूमिका थी, जिससे समाज का ढांचा परंपराओं के अनुसार नियंत्रित होता था। धार्मिक दृष्टि से यह युग धार्मिक सहिष्णुता, विविधता और नव जागरण का काल था। गुप्त शासकों ने वैदिक धर्म को संरक्षण दिया और विष्णु, शिव, देवी जैसे देवताओं की उपासना को प्रोत्साहित किया। इसी समय मंदिर निर्माण की परंपरा, मूर्तिपूजा, धार्मिक उत्सव और पौराणिक साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ। हालांकि बौद्ध धर्म और जैन धर्म का प्रभाव इस समय क्षीण होने लगा, लेकिन वे पूर्णतः लुप्त नहीं हुए। इन मतों के अनुयायी अभी भी शिक्षण संस्थानों, विहारों और धर्म–संप्रदायों के माध्यम से सक्रिय रहे। लोकधर्म, यक्ष–नाग पूजन और क्षेत्रीय धार्मिक मान्यताएँ भी जनमानस में विद्यमान थीं।गुप्तकालीन समाज और धर्म के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित थे। धर्म केवल पूजा–पद्धति नहीं, बल्कि सामाजिक आचरण, शिक्षा, राज्यनीति और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करने वाली शक्ति थी। यह शोधपत्र इसी गुप्तकालीन सामाजिक एवं धार्मिक ढांचे का विश्लेषण करेगा जिसमें समाज की वर्गीय संरचना, स्त्री की भूमिका, धार्मिक प्रवृत्तियाँ, और शासक वर्ग द्वारा अपनाई गई धार्मिक नीतियों को ऐतिहासिक संदर्भों सहित समाविष्ट किया जाएगा।इस अध्ययन का उद्देश्य गुप्तकालीन समाज की जटिलता और धार्मिक जीवन की व्यापकता को समझना है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि यह युग न केवल एक ऐतिहासिक परिवर्तन का काल था, बल्कि उसने आने वाले युगों की सामाजिक और धार्मिक नींव भी रखी।

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.699

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Refereed Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 4, April 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1404730|

अध्ययन के उद्देश्य:

- गुप्तकालीन समाज की संरचना का अध्ययन करना
- गुप्तकालीन धार्मिक विविधता का मूल्यांकन करना
- गुप्तकाल की सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था के दीर्घकालीन प्रभावों को चिन्हित करना
- स्त्रियों की स्थिति एवं उनके सामाजिक–धार्मिक अधिकारों का विश्लेषण करना

साहित्य समीक्षा:

1. **कुमार, प्रदीप (2018)** गुप्त काल में कृषि व्यवस्था नामक शोध पत्र में वर्णित किया है कि राजा समस्त भूमि का स्वामी था। परन्तु भूमि पर काश्त करने वाले किसान उसके वास्तविक स्वामी थे। किसान बिना भूमि– कर दिये अगर खेत को छोड़ दे तो सम्राट उस जमीन को बेच सकता था।
2. **सिंह, राधेश्याम (2018)** गुप्तकालीन भारत के अध्ययन में पाया है कि लेखक ने प्राथमिक व द्वितीय स्त्रोतों के आधार पर गुप्तकाल के प्रशासन, समान, धर्म, अर्थव्यवस्था, कला, शिक्षा व गुप्तकाल की जानकारी के प्रमुख स्त्रोतों का विस्तृत वर्णन किया है। इन विवरणों से स्पष्ट है कि गुप्तकाल में भारत ने प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति की थी। गुप्त शासक कुमार गुप्त ने नालंदा बौद्ध विहार की स्थापना की थी।
3. **सिंह, आशुतोष कुमार (2018)** प्राचीन भारत में धार्मिक सहिष्णुता की भावना लेखक ने इस शोध पत्र में वर्णित किया है कि प्राचीन भारत में धार्मिक सहिष्णुता यानि सभी धर्मो के प्रति सम्मान व आदर की भावना निहित थी। मौर्य व गुप्त शासको का व्यक्तिगत धर्म चाहे जैन, बौद्ध, हिन्दू, वैष्णव धर्म रहा है लेकिन इन काल के शासकों ने सभी धमों के प्रति सहनशीलता की नीति अपनाई। सम्राट अशोक ने अपने अभिलेखों में वर्णित किया है कि प्रजा को सभी धर्मों का सम्मान करना चाहिए।
4. **मजूमदार, डॉ. रमेश चन्द्र (2019)** प्राचीन भारतीय ग्रन्थ में मौर्य काल व गुप्त काल का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है। मौर्य व गुप्त शासकों के जीवन परिचय के साथ उनकी विजय, शासन –पद्धति, धर्म व कला को प्रतिपादित किया गया हैं।

गुप्त काल में सामाजिक व्यवस्था :

किसी भी काल का सामाजिक इतिहास उस काल में रहने वाले लोगों के सम्पूर्ण जीवन का स्वरूप प्रस्तुत करता है। साथ ही साथ तत्कालीन समाज में होने वाले विविध क्रिया–कलापों को भी अभिव्यक्त करता है। गुप्तकाल तक आते–आते मानव ने प्रगति के कई चरण पार कर लिए थे। कृषि, वाणिज्य, एवं व्यापार में उत्तरोत्तर उन्नति के साथ कला साहित्य, संगीत, विज्ञान आदि के क्षेत्र में भी प्रगति के आशातीत प्रमाण मिलते

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.699

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Refereed Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 4, April 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1404730|

हैं। गुप्तकालीन सामाजिक व्यवस्था के स्वरूप की जानकारी साहित्यिक एवं अभिलेखीय प्रमाणों से स्पष्ट रूप से मिलती हैं। यद्यपि प्राचीन भारतीय समाज हमेशा से ही वर्ण और जाति से प्रभावित रहा है। उपलब्ध साक्ष्यों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि गुप्तकाल के पहले की सामाजिक व्यवस्था भी इससे अछूती नहीं रही, चार्तुवर्ण व्यवस्था अभी भी भारतीय सामाजिक व्यवस्था का आधार थी।

वर्ण व्यवस्था के प्रारम्भिक रूप की जानकारी ऋग्वेद से प्राप्त होती है। उत्तर–वैदिक काल में चारो वर्णों की स्थिति स्पष्ट हो जाने के साथ ही साथ जन्म से जुड़ी जाति व्यवस्था का भी उदय हुआ और वर्ण शब्द जाति के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। जाति व्यवस्था ने धर्मसूत्रों और स्मृतियों के काल में विकसित रूप प्राप्त कर लिया था। अब वर्ण और जाति में मूल अन्तर यही रह गया था कि वर्ण केवल चार थे जबकि जातियाँ अनेक थी। गुप्त काल तक वर्ण व्यवस्था में नमनीयता बनी रही। गुप्तकालीन समाज भी परम्परागत चार वर्णों में विभक्त था, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

गुप्त काल में ब्राह्मणों की सामाजिक स्थिति :

सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ब्राह्मणों की सर्वोच्चता थी, उन्हें सभी प्रकार के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा शैक्षणिक अधिकार प्राप्त थे। समाज को शिक्षित करने, धर्मगत कार्यों को संपादित करने, याज्ञिक क्रियाओं को सम्पन्न करने तथा गुप्तकालीन सामाजिक आयाम दानादि करवाने में वह सहायक होते थे। यद्यपि कि ब्राह्मणों का प्राचीनतम उल्लेख ऋग्वैदिक–उत्तरवैदिक एवं सूत्रग्रन्थों में मिलता है। किन्तु गुप्तकाल में वेदों तथा उनके विभिन्न भागों के अध्ययन के आधार पर ब्राह्मणों को पहली बार अनेक शाखाओं एवं उप–शाखाओं में विभक्त किया गया। वृहत्संहिता में ऋग्वेदी, सामवेदी तथा अथर्ववेदी ब्राह्मणों का उल्लेख मिलता है। स्कन्दगुप्त के इन्दौर अभिलेख में चतुर्वेदी ब्राह्मणों का उल्लेख मिलता है।

गुप्तकालीन समाज में ब्राह्मणों को क्षत्रिय तथा वैश्य का कार्य करने की छूट थी। बहुत से ब्राह्मण शासक, राजकीय कर्मचारी, व्यापारी और वास्तुकार होते थे। किसी प्रकार का कोई व्यावसायिक प्रतिबन्ध न था। कई ऐसे राजवंशों का उल्लेख मिलता है जो ब्राह्मण थे जैसे कदम्ब और वाकाटक राजवंश, कुछ वैश्य और शूद्र शासकों का भी उल्लेख मिलता है। सौराष्ट्र, अवन्ति व मालवा के शासक शूद्र थे। इस काल तक ब्राह्मणों की नियुक्ति प्रशासनिक पदों पर होने लगी थी। गुप्तकालीन साहित्य में ब्राह्मणों की प्रशंसा की गयी है। कात्यायन का मानना था कि ब्राह्मण कभी किसी का दास नहीं हो सकता। गुप्तकाल में ब्राह्मणों को पर्याप्त राजकीय संरक्षण मिला, याज्ञवलक्य। और वृहस्पति का कहना है कि राजा तीनों वेदों के ज्ञान से सम्पन्न ब्राह्मण को सभी प्रकार की सुविधायें प्रदान करें। गुप्तकालीन सामाजिक आयाम गुप्तकालीन शिलालेखों में ब्राह्मणों को भूमि–दान देने के उल्लेख मिलते हैं। ब्राह्मणों को करमुक्ति भूमि दान देने का प्राचीनतम उल्लेख उत्तर–वैदिक साहित्य में मिलता है।

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Refereed Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 4, April 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1404730|

क्षत्रियों की सामाजिक स्थिति :

गुप्तकालीन वर्ण व्यवस्था में क्षत्रियों का स्थान ब्राह्मणों के बाद था। किन्तु उनका महत्व ब्राह्मणों से कम नहीं था। समाज और देश की रक्षा करना क्षत्रियों का प्रमुख कर्तव्य था। ब्रह्मा ने क्षत्रियों को दण्ड, सेना तथा युद्धों के लिए उत्पन्न किया था। अमरकोष में क्षत्रिय को कांड पृष्ठ (सैनिक), शस्त्रजीवा, आयुधीय तथा आयुधक कहा गया है। इस काल में वर्ण व्यवस्था का स्वरूप पहले की तरह ही था। बस थोड़ा बहुत बदलाव यह हुआ था कि इस काल में विदेशी, शकों, यवनों तथा पहलवों के अतिरिक्त पारदों तथा महिषकों जैसी जातियों को भी क्षत्रिय जाति में स्थान दे दिया गया। महाभारत तथा मुद्राराक्षस में भी इन विदेशी जन–जातियों का उल्लेख मिलता है।

वैश्यों की सामाजिक स्थिति :

वर्णाश्रम व्यवस्था में तीसरा स्थान वैश्य का था। वैश्यों का प्रमुख कार्य कृषि एवं व्यापार था। धर्मसूत्रों में अध्ययन, यजन, दान, कृषि, पशुपालन, और वाणिज्य व्यापार वैश्य वर्ण का प्रमुख कर्तव्य बताया गया है। द्विजों में वैश्यों का तीसरा स्थान वैदिक काल में ही निर्धारित हो चुका था। धनार्जन वैश्यवर्ण का प्रमुख उद्देश्य था लेकिन उन्हें उचित मार्ग से ही धन संचय करने का निर्देश दिया गया था। ब्राह्मणों और क्षत्रियों की तरह अध्ययन यज्ञ करना, तथा दान देना वैश्यों के भी कर्तव्य बताये गये हैं और कृषि, पशुपालन एवं वाणिज्य उनके प्रमुख व्यवसाय थे। वायु और कूर्म पुराण में भी वैश्यों का प्रमुख व्यवसाय कृषि बताया गया है। वृहत्संहिता में पशुओं की वृद्धि के लिए वैश्य द्वारा अगस्त ऋषि की प्रार्थना का उल्लेख मिलता है। न्यायालय में गवाही देने से पहले वैश्य को पशु, अनाज, एवं स्वर्ण की शपथ लेनी पड़ती थी। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कृषि और पशुपालन उनके प्रमुख व्यवसाय थे।

शूद्रों की सामाजिक स्थिति :

समाज का सबसे निम्न वर्ण शूद्र था इनका प्रमुख कार्य ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की सेवा करना था, इस काल में एक परिवर्तन देखने को मिलता है कि जो परम्परा पहले से चली आ रही थी अब वह टूटने लगी थी। इस काल में शिल्प कर्म शूद्र के सामान्य कर्म में शामिल हो गया था। वृहस्पति ने सोने, काष्ठ, धातु, धागे, पत्थर और चमड़े के कार्य करने वालों को शिल्पी कहा है। अमरकोष में शूद्र वर्ग के शिल्पियों की सूची मिलती है जिसमें सामान्य शिल्पियों, मालियों, धोबियों, राजमिस्त्रियों, जुलाहों, दर्जियों, चित्रकारों, शास्त्रकारों, चर्मकारों, लुहारों, शंख शिल्पियों और ठठेरों के नाम मिलते हैं। अमरकोष में ढोल बजाने वाले, पानी वाले, वंशी और वीणा बजाने वाले, अभिनेता, नर्तक, इन सभी का उल्लेख शूद्र वर्ग नामक प्रकरण में मिलता है।

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.699

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Refereed Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 4, April 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1404730|

मिश्रित/वर्ण संकर जातियाँ :

मिश्रित जातियों के लिए वर्ण संकर के अतिरिक्त विवर्ण तथा अवर्णज शब्द मिलते हें। याज्ञवल्क्य स्मृति तथा अमरकोष में अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाहों से उत्पन्न वर्ण संकर जातियों के विषय में जानकारी मिलती है। ब्राह्मण पुरुष द्वारा क्षत्रिय तथा शूद्र स्त्री से 'निषाद', ब्राह्मण पुरूष तथा शूद्र स्त्री से 'पारशव', क्षत्रिय पुरूष तथा वैश्य स्त्री से 'माहिष्य', क्षत्रिय पुरुष तथा शूद्र स्त्री से 'उग्र', वैश्य पुरुष तथा शूद्र स्त्री से 'करण', क्षत्रिय पुरुष तथा ब्राह्मण स्त्री से 'सूत', वैश्य पुरुष तथा ब्राह्मण स्त्री से 'वैदेहक', गुप्तकालीन सामाजिक आयाम वैश्य पुरुष तथा क्षत्रिय स्त्री से 'मागध', शूद्र पुरुष तथा क्षत्रिय स्त्री से 'क्षत्ता', शूद्र पुरुष तथा वैश्य स्त्री से 'आयोगव', महिष्य पुरुष तथा करणी स्त्री से 'रथकार', नामक वर्ण संकर जातियाँ उत्पन्न हुई।

निष्कर्ष:

गुप्तकालीन सामाजिक व्यवस्था एक सुसंगठित, श्रेणीबद्ध और परंपरानिष्ठ ढांचे पर आधारित थी, जिसमें वर्ण व्यवस्था को सामाजिक जीवन की मूल आधारशिला के रूप में स्थापित किया गया था। इस काल में ब्राह्मणों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था और धर्म, शिक्षा तथा सांस्कृतिक नेतृत्व उनके अधीन था। क्षत्रिय वर्ग प्रशासन और युद्ध संचालन में सक्रिय था, जबकि वैश्य वर्ग व्यापार एवं अर्थव्यवस्था से जुड़ा हुआ था। शूद्रों की स्थिति तुलनात्मक रूप से निम्न मानी जाती थी, और उन्हें सेवा कार्यों तक सीमित रखा गया। समाज में जातीय अनुशासन और सामाजिक नियंत्रण के लिए धर्मशास्त्रों, स्मृतियों और परंपराओं का विशेष स्थान था। पारिवारिक व्यवस्था पितृसत्तात्मक थी, और महिलाओं की भूमिका मुख्यतः घरेलू कार्यों तक सीमित रही, यद्यपि कुछ शिक्षित एवं प्रतिष्ठित स्त्रियाँ भी समाज में दृष्टिगोचर होती हैं। शिक्षा प्रणाली का केंद्र ब्राह्मण वर्ग था, जिसमें धार्मिक ग्रंथों, व्याकरण, खगोल, गणित आदि विषयों का अध्ययन होता था। गुप्तकालीन समाज में सामाजिक गतिशीलता की संभावनाएँ सीमित थीं, तथा वर्ण और जाति के अनुसार जीवन की दिशा पूर्वनिर्धारित मानी जाती थी। यह व्यवस्था यद्यपि उस समय सामाजिक स्थिरता और अनुशासन को बनाए रखने में सहायक रही, परंतु दीर्घकालीन दृष्टि से यह रूढ़िवादिता और सामाजिक असमानता को भी जन्म देने वाली सिद्ध हुई। इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गुप्तकालीन सामाजिक व्यवस्था एक धार्मिक व परंपरागत अधिष्ठान पर आधारित सुव्यवस्थित किंतु स्तरीकृत संरचना थी, जिसने उस समय के सामाजिक जीवन को एक दिशा दी, परंतु साथ ही सामाजिक विभाजन और स्त्री–पुरुष असमानता को भी संस्थागत स्वरूप प्रदान किया।

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1404730|

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. शर्मा, रामशरण. ''प्राचीन भारत में सामाजिक एवं आर्थिक संरचना'', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003।
2. झा, डी. एन. ''प्राचीन भारत– एक सामाजिक इतिहास'', ग्रंथशिल्पी, दिल्ली, 1997।
3. मजूमदार, आर. सी. ''प्राचीन भारत का इतिहास'', भारतीय विद्या भवन, मुंबई, 1988।
4. शर्मा, रामशरण. ''भारत का प्राचीन अतीत'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 2007 (पुनर्मुद्रण संस्करण)।
5. सिंह, उपेंद्र. ''प्राचीन भारत का सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास'', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010।
6. त्रिपाठी, रामचंद्र. ''प्राचीन भारत का इतिहास'', आत्माराम एंड संस, दिल्ली, 1990 (12वाँ संस्करण)।
7. ठाकुर, जुगल किशोर. ''भारत का सांस्कृतिक इतिहास'', साहित्य भवन, आगरा, 2001।
8. शास्त्री, के. ए. नीलकंठ. ''प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास'', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1984।
9. मित्तल, सत्यव्रत. ''गुप्त कालीन भारत'', विद्यापीठ प्रकाशन, वाराणसी, 1995।
10. शर्मा, रामशरण. ''भारतीय धर्म और समाजरू ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य'', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002।
11. शास्त्री, हरप्रसाद. ''हिन्दू धर्म का विकास'', भारतीय साहित्य सभा, कलकत्ता, 1933।
12. झा, ललित कुमार. ''गुप्तकालीन संस्कृति और समाज'', पुरातत्व एवं इतिहास प्रकाशन, पटना, 1998।
13. दत्त, नीलकंठ. ''गुप्त साम्राज्य का उत्कर्ष'' हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली, 2000।
14. सिंह, राधाकृष्ण. ''भारतीय सामाजिक व्यवस्था का विकास'', साहित्य संसार, इलाहाबाद, 1993।
15. शुक्ल, हरिशंकर. ''गुप्त युग की धार्मिक परंपराएँ'', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2005।

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details